BACKGROUNDERS
Press Information Bureau
Government of India

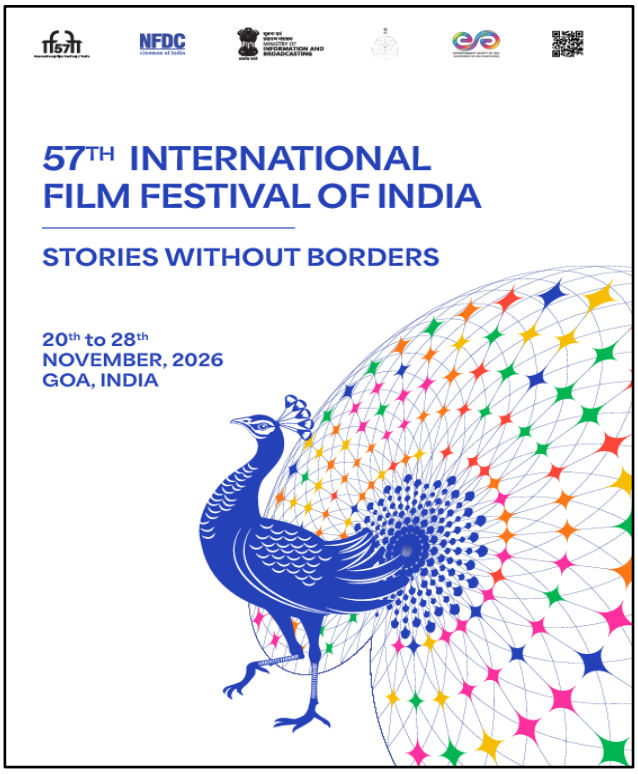
पर्दे से परे

भारतीय सिनेमा के भविष्य को आकार दे रहा है इफ्फी

19 नवंबर, 2026

गोवा में 57वां इफ्फी

सिनेमा में लोगों को जोड़ने की अनूठी क्षमता होती है। किसी दूर-दराज के गाँव की कहानी हजारों मील दूर बैठे दर्शकों को भी भावुक कर सकती है। किसी अपरिचित भाषा में बनी फिल्म ऐसी भावनाएँ जगा सकती है, जिन्हें हर कोई समझ सकता है। भौगोलिक सीमाओं और सांस्कृतिक भिन्नताओं से परे, कहानियाँ लोगों को जोड़ने के रास्ते तलाश ही लेती हैं। फिल्म महोत्सव विविध आवाज़ों, नए दृष्टिकोणों तथा नई प्रतिभाओं को एक ही मंच पर लाकर इन जुड़ावों को मुमकिन बनाते हैं। ।



स्रोत: सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय

कहानी कहने की यही भावना **57वें भारतीय अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव (इफ्फी)** में प्रमुखता से देखने को मिलेगी। यह महोत्सव **20 से 28 नवंबर 2026 तक गोवा में** आयोजित किया जाएगा। इसकी थीम *'सीमाओं से परे कहानियाँ* है, जो विभिन्न संस्कृतियों और देशों के लोगों को जोड़ने की सिनेमा की शक्ति का कीर्तिगान करती है। नौ दिनों तक चलने वाले इस महोत्सव में दुनिया भर के फिल्म निर्माता, उभरती प्रतिभाएँ और सिनेमा प्रेमी एक मंच पर एकत्रित होंगे।

फिर भी, इफ्फी का दायरा केवल दर्शकों द्वारा देखी जाने वाली फिल्मों तक सीमित नहीं, बल्कि से कहीं बढ़कर है। किसी युवा फिल्म निर्माता के लिए यह वैश्विक फिल्म उद्योग से पहला परिचय पाने का अवसर हो सकता है। किसी क्षेत्रीय कहानीकार के लिए यह अपनी भाषा और संस्कृति की परिचित सीमाओं से बाहर निकलकर व्यापक दर्शकों तक पहुँचने का माध्यम बन सकता है। वहीं, किसी स्वतंत्र फिल्म निर्माता के लिए यह नए सहयोग और अवसरों के द्वार खोल सकता है। विभिन्न पहलों के माध्यम से इफ्फी प्रतिभाओं को निरंतर प्रोत्साहित कर रहा है, भारत की सिनेमाई विविधता का उत्सव मना रहा है और वैश्विक संबंधों को मजबूत बना रहा है।

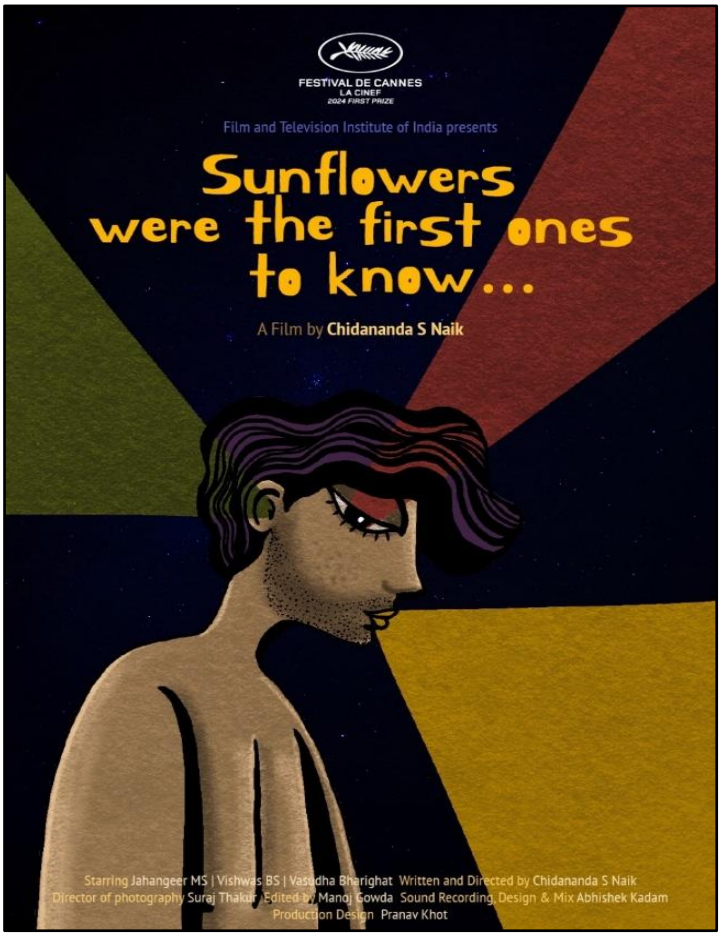
कहानीकारों की नई पीढ़ी को प्रोत्साहित करना

हर फिल्म निर्माता की शुरुआत कहीं न कहीं से होती है। अक्सर इसकी शुरुआत एक विचार और उसे साकार करने के दृढ़ संकल्प से होती है। उस विचार को फिल्म का रूप देने के लिए केवल रचनात्मकता ही पर्याप्त नहीं होती, बल्कि इसके लिए तकनीकी कौशल, आपसी सहयोग, फिल्म उद्योग से जुड़ने का अनुभव और अपनी क्षमताओं को प्रदर्शित करने के अवसर भी आवश्यक होते हैं। उभरते फिल्म निर्माताओं के लिए इफ्फी ये महत्वपूर्ण कदम उठाने का अवसर प्रदान करता है।

इस प्रयास के केंद्र में **'क्रिएटिव माइंड्स ऑफ टुमॉरो '(सीएमओटी)** पहल है, जिसकी शुरुआत वर्ष 2021 में हुई थी। इफ्फी 2026 में इसके छठे संस्करण में **फिल्म निर्माण से जुड़ी 13 विधाओं की 100 युवा प्रतिभाएँ** एक साथ आएँगी। इन विधाओं में निर्देशन, छायांकन और पटकथा लेखन से लेकर साउंड रिकॉर्डिंग, वेशभूषा डिजाइन और दृश्य प्रभाव तक शामिल हैं। यह पहल इस बात को मान्यता देती है कि फिल्म निर्माण कई रचनात्मक विधाओं के समन्वित प्रयासों पर निर्भर करता है।

प्रतिभागियों को फिल्म जगत के स्थापित पेशेवरों के साथ मास्टरक्लास, कार्यशालाओं और संवाद सत्रों में भाग लेने का अवसर मिलेगा। **48 घंटे की फिल्म निर्माण चुनौती** के माध्यम से अपने विचारों को मुकम्मल फिल्म का रूप देने की उनकी क्षमता को परखा जाएगा। इस कार्यक्रम सीएमओटी टैलेंट कैंप भी शामिल है, जहाँ प्रतिभागी अपनी रचनात्मक अवधारणाओं को प्रस्तुत करेंगे तथा मीडिया एवं मनोरंजन उद्योग में उपलब्ध अवसरों की तलाश करेंगे । ये सभी गतिविधियाँ पारंपरिक क्लासरूम में होने वाले शिक्षण से आगे बढ़कर उन्हें व्यावहारिक अनुभव और फिल्म उद्योग से जुड़ने का अवसर प्रदान करती हैं।

इस पहल के माध्यम से युवा फिल्म निर्माताओं को पहले ही अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान हासिल हो चुकी है। इसका उल्लेखनीय उदाहरण **चिदानंद एस नाइक** हैं, जिन्होंने वर्ष 2022 में सीएमओटी में भाग लिया था। भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान (एफटीआईआई) के छात्र के रूप में बनाई गई उनकी लघु फिल्म *सनफ्लावर्स वर द फर्स्ट वन्स टू नो* ने वर्ष 2024 में कान फिल्म महोत्सव में **ला सिनेफ पुरस्कार** जीता। कन्नड़ भाषा में बनी यह फिल्म भारतीय लोककथाओं और परंपराओं से प्रेरित है। इसने प्रदर्शित किया कि स्थानीय परिवेश और परंपराओं से जुड़ी कहानियों में भी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दर्शकों को आकर्षित करने की क्षमता होती है। उनकी यह यात्रा उभरते हुए भारतीय फिल्म निर्माताओं के लिए उपलब्ध संभावनाओं को दर्शाती है।



स्रोत: सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय

वर्ष 2026 का यह महोत्सव अपनी फिल्म प्रस्तुतियों के माध्यम से नए दृष्टिकोणों को भी विशेष महत्व दे रहा है। इसमें भारत और विदेशों की **52 महिला फिल्म निर्माताओं और 62 नवोदित फिल्म निर्माताओं** की फिल्में प्रदर्शित की जाएँगी। इनमें से **10 महिला फिल्म निर्माताओं और 12 नवोदित फिल्म निर्माताओं** की फिल्में प्रतियोगिता खंडों में शामिल होंगी। इसके अलावा, **विभिन्न देशों की सात फिल्में, जिनमें भारत की द स्लेज और *बर्ड्स ऑन आइस* भी शामिल हैं**, **सर्वश्रेष्ठ नवोदित फीचर फिल्म प्रतियोगिता** में हिस्सा लेंगी। ऐसे मंच पहली बार फिल्म निर्देशन करने वाले निर्देशकों को स्थापित फिल्म निर्माताओं के साथ अपनी कृतियाँ प्रस्तुत करने और अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने के अवसर प्रदान करते हैं।

इफ्फी प्रतिभाओं को उनके विकास के विभिन्न चरणों में आगे बढ़ने के लिए मंच प्रदान करता है। जहाँ कुछ प्रतिभागी फिल्म निर्माण की बारीकियाँ सीख रहे होते हैं, वहीं अन्य अपनी पहली फिल्मों के माध्यम से पहचान बनाने का प्रयास कर रहे होते हैं। यह महोत्सव इन सभी को एक मंच पर लाता है, जिससे नए विचारों और उभरती प्रतिभाओं को व्यापक दर्शकों तक पहुँच बनाने का अवसर मिलता है।

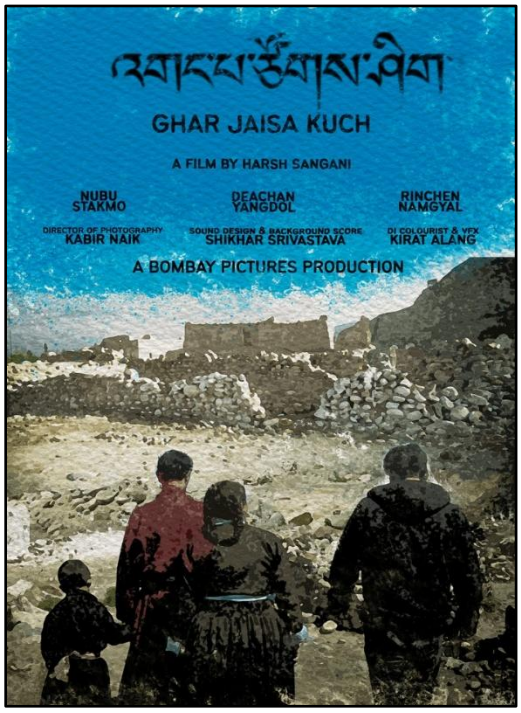
भारतीय पैनोरमा: अनेक भारतीय भाषाओं में फिल्में

भारत का सिनेमाई परिदृश्य यहाँ के विविध समुदायों और संस्कृतियों की तरह ही बहुरंगी है। मुख्यधारा के सिनेमा से परे, देश की क्षेत्रीय भाषाओं और फिल्म निर्माण की परंपराओं से अनगिनत कहानियाँ उभरकर सामने आती हैं। इनमें से कुछ कहानियाँ जीवन के उन अनुभवों को दर्शाती हैं, जिनसे हर कोई परिचित है, जबकि कुछ ऐसे जीवन और परिस्थितियों से रूबरू कराती हैं, जिन्हें पर्दे पर शायद ही कभी जगह मिलती है। इन विविध दृष्टिकोणों को एक मंच पर लाना लंबे समय से इफ्फी का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य रहा है।

वर्ष 1978 में शुरू किया गया **'भारतीय पैनोरमा'** इस प्रयास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इफ्फी का यह प्रमुख खंड समकालीन भारतीय **फीचर और गैर फीचर फिल्मों** की उत्कृष्ट कृतियों को प्रदर्शित करता है।

पिछले कई वर्षों से भारतीय पैनोरमा ने क्षेत्रीय परिवेश की कई विशिष्ट कहानियों को पहचान दिलाई है। इफ्फी 2023 में मणिपुरी वृत्तचित्र ***एंड्रो ड्रीम्स*** ने गैर फीचर फिल्म खंड का उद्घाटन किया। मीना लोंगजाम द्वारा निर्देशित यह फिल्म ग्रामीण मणिपुर के एक बालिका फुटबॉल क्लब की कहानी पर आधारित थी। इसमें आर्थिक कठिनाइयों और गहराई तक जड़ें जमाए सामाजिक अवरोधों के बीच महिलाओं के दृढ़ संकल्प और संघर्ष को दर्शाया गया था। वर्ष 2024 में लद्दाखी लघु फिल्म ***घर जैसा कुछ*** ने एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की। यह भारतीय पैनोरमा के गैर फीचर फिल्म खंड





स्रोत: सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय

का उद्घाटन करने वाली पहली लद्दाखी फिल्म बनी। हर्ष सांगानी द्वारा निर्देशित इस फिल्म में विस्थापन, अपनेपन की भावना और घर लौटने की चाह जैसे विषयों को उठाया गया था।

यह विविधता वर्ष 2025 में भी देखने को मिली, जब स्थापित और अपेक्षाकृत कम प्रतिनिधित्व वाली सिनेमाई परंपराओं की फिल्मों को शामिल किया गया। तमिल फिल्म ***अमरन*** को फीचर फिल्म खंड के उद्घाटन के लिए, जबकि हिंदी फिल्म ***काकोरी*** को गैर फीचर फिल्म खंड के उद्घाटन के लिए चुना गया । चयनित फिल्मों में ब्रज भाषा की ***विमुक्त ,*** तुलु भाषा की ***इम्बु*** और मणिपुरी भाषा की ***ओइथारेई*** भी शामिल थीं। इन फिल्मों ने भारतीय पैनोरमा के माध्यम से प्रस्तुत की जाने वाली कहानियों के बढ़ते भाषाई विस्तार और विविधता को दर्शाया।

57वाँ इफ्फी 25 फीचर और 20 गैर फीचर फिल्मों के साथ इस परंपरा को आगे बढ़ा रहा है। इन फिल्मों का चयन क्रमशः **404** फीचर फिल्मों और **358 गैर फीचर फिल्मों** की प्रविष्टियों में से किया गया है। कुल मिलाकर, भारतीय सिनेमा खंड में **18 भाषाओं की 76 फिल्में** प्रदर्शित की जाएँगी। लीना यादव द्वारा निर्देशित लद्दाखी फिल्म ***'बिकमिंग'*** गैर फीचर फिल्म खंड का उद्घाटन करेगी, जबकि आदित्य धर द्वारा निर्देशित ***धुरंधर*** उद्घाटन फीचर फिल्म होगी। अन्य चयनित फिल्मों में न्यीशी भाषा की ***उरुम***, तुलु भाषा की ***पिली चन्ने*** और लद्दाखी भाषा की ***बर्ड्स ऑन आइस*** शामिल हैं। यह महोत्सव **मराठी** और **मलयालम** सिनेमा को भी विशेष रूप से रेखांकित करेगा तथा उनकी समृद्ध विरासत और समकालीन रचनात्मक अभिव्यक्तियों का उत्सव मनाएगा।



पिली चन्ने

इस तरह का चयन भारतीय सिनेमा में विविध स्वरों को स्थान देने के महत्व को रेखांकित करता है। कोई क्षेत्रीय फिल्म दर्शकों को अपरिचित परिदृश्यों, परंपराओं और अनुभवों से परिचित करा सकती है।



बर्ड्स ऑन आइस

इसके बावजूद, उसमें निहित मूल भाव दर्शकों को गहराई से अपनेपन का एहसास करा सकते हैं। इन कहानियों को एक साथ लाकर भारतीय पैनोरमा भारत की सिनेमाई पहचान की समझ को और व्यापक बनाता है। साथ ही, यह फिल्म निर्माताओं को अपने क्षेत्र के दायरे से बाहर निकलकर व्यापक दर्शक वर्ग से जुड़ने का अवसर भी प्रदान करता है।

वेव्स फिल्म बाज़ार और ब्रिक्स शोकेस

किसी फिल्म की यात्रा उसका अंतिम दृश्य फिल्माए जाने के साथ समाप्त नहीं होती। दर्शकों तक पहुँचने के लिए अक्सर वित्तीय सहायता, उद्योग से संपर्क और परिचित बाजारों से परे नए अवसरों की आवश्यकता होती है। स्वतंत्र फिल्म निर्माताओं के लिए ऐसे अवसर तलाशना विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण हो सकता है। पिछले कुछ वर्षों में इफ्फी एक ऐसे मंच के रूप में विकसित हुआ है, जहाँ इस तरह के संपर्क आकार ले सकते हैं।

'वेव्स फिल्म बाज़ार' ऐसा ही एक मंच है, वर्ष 2026 में जिसका **20वाँ संस्करण** आयोजित किया जा रहा है। वर्ष 2007 में स्थापित यह **दक्षिण एशिया का सबसे बड़ा फिल्म बाज़ार** है, जिसका आयोजन गोवा में इफ्फी के साथ किया जाता है। पारंपरिक फिल्म महोत्सव से अलग, फिल्म बाज़ार मुख्य रूप से सिनेमा के व्यावसायिक पक्ष और विकास पर ध्यान केंद्रित करता है। यह दुनिया भर के फिल्मकारों, निर्माताओं, पूंजी लगाने वालों, वितरकों और फिल्म उद्योग के अन्य पेशेवरों को एक मंच पर लाता है। इसका उद्देश्य संभावनाओं से भरपूर फिल्म परियोजनाओं को आवश्यक सहयोग और समर्थन दिलाना है, ताकि वे दर्शकों तक पहुँच सकें।

संभावनाओं से भरपूर किसी पटकथा को निर्माता की आवश्यकता हो सकती है, जबकि अधूरी फिल्म को विशेषज्ञ मार्गदर्शन की जरूरत हो सकती है। वहीं, हो सकता है कि कोई अन्य फिल्म वितरण के लिए

तैयार हो, लेकिन उसके निर्माताओं की अंतरराष्ट्रीय खरीदारों तक पहुँच न हो। फिल्म बाज़ार विशेष रूप से तैयार किए गए विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से इन विविध प्रकार की आवश्यकताओं को पूरा करता है। इसका **को प्रोडक्शन मार्केट** परियोजनाओं को संभावित सहयोगियों और पूंजी लगाने वालों से जोड़ता है। **स्क्रीन राइटर्स लैब** लेखकों को सहयोग और मार्गदर्शन प्रदान करती है, जबकि **वर्क-इन-प्रोग्रेस लैब** फिल्म निर्माताओं को अपनी फिल्मों को और बेहतर बनाने में मदद करती है। **व्यूइंग रूम**, मार्केट स्क्रीनिंग और **प्रोड्यूसर्स लैब** के माध्यम से फिल्म निर्माताओं को संभावित खरीदारों और वितरकों से जुड़ने का अवसर मिलता है।

इन प्रयासों का असर प्लेटफॉर्म से जुड़ी फिल्मों के ज़रिए देखा जा सकता है।***द लंचबॉक्स, कोर्ट, न्यूटन और गर्ल्स विल बी गर्ल्स*** ऐसी चर्चित फिल्मों में शामिल हैं, जिनकी यात्रा में फिल्म बाज़ार ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। जैसे-जैसे फिल्म बाज़ार दो दशक पूरे कर रहा है, इसका महत्व सिर्फ़ अलग-अलग फिल्मों तक ही सीमित नहीं रह गया है। यह अंतरराष्ट्रीय सहयोग और वैश्विक दर्शकों तक पहुँच बनाने के इच्छुक भारतीय कहानीकारों के लिए अवसरों के बढ़ते नेटवर्क का प्रतिनिधित्व करता है।

जहाँ एक ओर फिल्म बाज़ार फिल्मों को नए बाजारों तक पहुँचने में मदद करता है, वहीं सिनेमा साझा अनुभवों के माध्यम से देशों को भी जोड़ता है। इस सांस्कृतिक पहलू की अभिव्यक्ति **इफ्फी के ब्रिक्स सिनेमा शोकेस** में देखने को मिलती है, जिसमें वर्ष **2026** में **21 फिल्में** प्रदर्शित की जाएँगी। ब्रिक्स देशों की कहानियों को एक मंच पर लाने वाला यह कार्यक्रम विभिन्न देशों के इतिहास, समाज और समकालीन वास्तविकताओं को सामने रखता है। यह दर्शकों को उनके अपने अनुभवों से अलग नज़रिए से रूबरू होने का मौका देता है।

इन फिल्मों का चयन ब्रिक्स देशों के समाजों की विविधता के साथ-साथ उन साझा सरोकारों को भी दर्शाता है, जो उन्हें आपस में जोड़ते हैं। ब्राजील की फिल्म ***अमादेओ एंड द हाइपोथेटिकल न्यू वर्ल्ड*** में गुलामी के खिलाफ संघर्ष को फिर से दिखाया गया है। इंडोनेशिया की फिल्म ***द सी स्पीक्स हिज नेम*** वर्ष 1998 के जन आंदोलन के दौरान एक छात्र कार्यकर्ता के लापता होने की कहानी प्रस्तुत करती है। वहीं, दक्षिण अफ्रीका की फिल्म ***द ट्रेक*** औपनिवेशिक सीमांत क्षेत्रों में हुए अन्याय की पड़ताल करती है। अलग-अलग ऐतिहासिक पृष्ठभूमियों पर आधारित होने के बावजूद, ये फिल्में स्वतंत्रता, पहचान और अपनेपन जैसे महत्वपूर्ण सवालों को उठाती हैं।

कुछ अन्य फिल्में रोजमर्रा के जीवन से जुड़े अनुभवों का रुख करती हैं। युगांडा और ब्रिटेन के संयुक्त निर्माण वाली वृत्तचित्र फिल्म ***ड्रीमिंग ऑफ सेरेनाडा*** में पिता और पुत्री के रिश्ते के माध्यम से जलवायु परिवर्तन के मुद्दे को सामने लाया गया है। चीन की फिल्म ***एम्बर्स*** शोक, क्षति और मृत्यु की वास्तविकता पर चिंतन करती है। इस तरह की कहानियाँ दर्शाती हैं कि व्यक्तिगत अनुभव किस प्रकार व्यापक सामाजिक सरोकारों को समझने का माध्यम बन सकते हैं। साथ ही, ये यह भी उजागर करती हैं कि अलग-अलग समाजों से जुड़ी कहानियाँ भावनात्मक स्तर पर साझा जुड़ाव स्थापित कर सकती हैं।



ड्रीमिंग ऑफ सेरेनाडा



एम्बर्स

ब्रिक्स शोकेस देशों के बीच **सांस्कृतिक समझ और संवाद को बढ़ावा देने में सिनेमा की भूमिका** को दर्शाता है। यह ऐसी कहानियों को मंच प्रदान करता है, जिनसे अंतरराष्ट्रीय दर्शक अन्यथा अपरिचित रह सकते हैं। फिल्म बाज़ार के साथ मिलकर यह इफ्फी की बढ़ती वैश्विक सहभागिता को एक नया आयाम प्रदान करता है। जहाँ एक पहल फिल्म उद्योग के पेशेवरों के बीच संपर्क और सहयोग को बढ़ावा देती है, वहीं दूसरी फिल्मों और कहानी कहने के माध्यम से विचारों के आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करती है।

ये दोनों मंच मिलकर दर्शाते हैं कि इफ्फी का प्रभाव महोत्सव के नौ दिनों तक ही सीमित नहीं रहता। ये फिल्म निर्माताओं के लिए नई संभावनाओं और दर्शकों के लिए नए दृष्टिकोणों के द्वार खोलते हैं। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि ये दर्शाते हैं कि सिनेमा किस प्रकार **सहयोग और साझा अनुभवों** के माध्यम से लोगों को आपस में जोड़ सकता है।

एक ऐसा महोत्सव, जहाँ कहानियाँ नई यात्राओं का आगाज़ करती हैं

फिल्म महोत्सव फिल्मों की स्क्रीनिंग, पुरस्कारों और समारोहों से कहीं बढ़कर है। यह ऐसे अवसरों और संपर्कों का भी सृजन करता है, जिनका सिलसिला महोत्सव समाप्त होने के बाद भी जारी रहता है। उभरते हुए फिल्म निर्माताओं के लिए ऐसे संपर्क नई संभावनाओं के द्वार खोल सकते हैं। क्षेत्रीय और स्वतंत्र सिनेमा के लिए ये व्यापक दर्शक वर्ग तक पहुँच कायम करने का अवसर प्रदान करते हैं। ये

अवसर मिलकर, भारतीय फिल्म उद्योग को अधिक विविधतापूर्ण और वैश्विक स्तर पर सम्बद्ध बनाने में योगदान देते हैं।

'सीमाओं से परे कहानियाँ ' थीम इसी भावना को प्रतिबिंबित करती है। यह उन कहानियों में भी झलकती है, जिन्हें दर्शक अनुभव करते हैं और उन कहानियों को साकार करने वाले लोगों के कार्यों में भी। **57वाँ इफ्फी** प्रतिभाओं, रचनात्मकता और विभिन्न संस्कृतियों को एक मंच पर लाकर लोगों को जोड़ने की सिनेमा की शक्ति को और सुदृढ़ करता है। किसी फिल्म महोत्सव का स्थायी योगदान केवल उसमें प्रदर्शित होने वाली फिल्मों में ही नहीं, बल्कि भविष्य में उनके निर्माताओं द्वारा हासिल की जानी वाली उपलब्धियों में भी निहित होता है।

संदर्भ

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय

https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2335780

https://www.iffigoa.org/pdfs/catalogue-57.pdf

https://www.iffigoa.org/cmot/about-cmot

https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2021475

https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2070656

https://www.iffigoa.org/index.php/indian-panorama/about-ip

https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1978678

https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2075681

https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2187868

https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2336235

https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2337040

https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2336497

https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2336493

https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2174755

https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2336218

पीआईबी शोध

पीके/केसी/आरटी/आरके